

Acc. No. 1477

वममिदं वममिदं वममिदं  
यमकमसकभृष  
मियंमपयपनुडि  
मममिड्डरुवेयड्ड  
उमिमुपतिरुम

Wrongly  
bound by  
the Dept. under  
Dr. Yash

१३७७७३  
१३७७७३  
१३७७७३



[illegible]

श्री.  
०१३

[illegible]

श्री.  
०१३



मुडीभम्भेध॥ निभमनलोपसुगकद्वभुनिवेमननिमकुव॥ विरुद्धभीठवसुइलडि  
 कडिधुडिउरुउरुधयमिउवसामसङ्किउमेवभविषवडिनिधियउमेवलीकिउउमेरुकुधवि  
 सेधैःधरभजधरवीभगसुकिजनभापारलडभाधमिउमभत्रमधिउदियउभावलेकनं  
 नरुमयेधलीकरेडिउषधुधुनिविसेसुगेभउउनिठभभनेधिउविठभनेनरुमयधुधरुड  
 भाउउयडःभेधिसुधुविषुहडकडुडुधुडिउउसजिलका॥ धरभेसुगेकुधयेगेनधरभ  
 धुडिउ, ठभभनध॥ मिउसुवउउरेउः, यमउमुडीवमनसुउलका॥ ठिहूनकुधया  
 उरसुउउरकुधनूमयधुभीकरलेनभसडिउरुउकु॥ भकुउरुल्लटयेनैवडवकुभधिय  
 रुडभहडिधरिठिगाहुभरभेउविमनुउरधधलठउउरुमकुनिगुमवमनहुनरियलका

ॐ

पु.  
दि.  
०१०

[illegible]

श्री.





श्री.  
०१७



८

सी.  
०१०



सुडय विकल्पन क्रियया उरुङ्गनः रं सुगभरुव भैव धमेर भाषा गली भाषिः धातु मन्त्र सु उचर्त्ते  
 रुम्भी नरु भिणवडी उधिविभिम्भुडयं विकल्प भाषि भानठ भानी सुरभा धुनैर्विधल्लीवडीति  
 भवाध सवी भूडय भाषिरीमभा धुधल्ली विनीडु कुभा ॥००॥ नत्रेवेयमिध सवी भाषिभं  
 भागुध उरुधिरभ सुगी भाषिः धर्मः किं कुद मिडिनीलीयते ॥ भाषा गली उषा मेसः भनः  
 भा धुवठ भवन् विकल्प रुनेनैक गूडुमले सुरडा धरुभा । तं सुगभर्जे सिध भाषा गली सु  
 धालरि र भाषा गली सु उषेडि निद्रि धुि सिमद्रुमिः । उभूम भाभा तुलकालं भा धुवठ भनं न भ  
 भियं भजेयम विकल्प रुनैक गूडुमले उभि विचिकल्प कथरिगली उरुवभा धुवठ गैर क गूडुभव  
 लधु रुभि रुभि डै सुद धर भज धमं ठवडि । उरुनुलु वरि रु धु निमधै नै ध धरि रु रै ध रै स

ਸ੍ਰੀ.  
੧੩



पतिधसुतुपडयं, उमुतेउमुति, धसुकडुकभधुमुधभजनभीसभधुनभधगि वडिनीच  
 उएवडभीसुभधुभधणीवडी सुभापगलीधुतिभभनियड, उहुयाडंरुहुमिति येनभ  
 धुंउउमुवडयनउमुननयमिधमिगधिभधुमक्तिरभितुहीसुगएव, भटं, रंसुगएवभे,  
 नत्रेवंभापगलंरुंकभभडु, भुनठवडि, ठवेड, यमिभुमक्तिं धरिणीयाड यवडाभउभ  
 धरिहुडाधरवमभुवभउविकल्द क्रियाविकल्दनमक्तिरुमेडि, ननकेनभाउभुहुभुउ, मुहु,  
 रंसुभधुधभभजुपडयमचुगमिलदल्लभुयभमक्तिः भुतुधविमुतिलदल्ल धरभेसुदेध  
 रीयभुयेएनभभुक्रिमिमेवडमभभयीउमुः ककगमिवरुवेमिहुविमिहुडययभेविक  
 ल्द क्रियाउभधमिरेकइनिउरुठवभुल्ललतेनभिइमिमंसहूरयमिहुक्रिवरुवेमिहुउवि

धु.  
 ठि.  
 ०२३

विकल्दक्रियायउउरुवेमिहुमिहुया, उविमेभंहुडयतिभुतुगाइनभुहुंभमेयतुधभजनडी  
 सुगवरुजनयेनेडि, ठिउडिभिसुभिसुडयठिहुभनमुठभेयेधभजनंउविमेधभभभुहु  
 नेहुःभुतुगाइनःभुतिभुरुधभभुभिसुभुभंवेरुनवगभभुधभुभङ्गीरुंभुकसहुनःभुक।  
 ल्द विकल्दनीयाःभुतिभुलिभुवभनभभवेल्लविठिउठिःभंहुठिःभुयेयंसहूरयमिहुमि  
 कठिठवनविमेधभभवेल्लउउविमिहुभुयःगपहुधयुजठिःभुगल्लउहुयल्लभहुल्लेभ  
 हुहुहुहुमविकल्दयेगे, एउरुहुंठवडि, रंसुभभुविकल्दहुकडभभुगल्लभुहुविभभविधयी  
 ठहुभहुः, धमिभुहुहुधेननदेवकिनिविकल्दभभभुहुभुभुहुठवडि, भंभभिकरुनभ  
 नभिहुवदुधयेगमितिउउविकल्दुहुयवनेवभुभुवनेवविकल्दुहुउहुविमेधःभुमेयभु

श्री.  
 ०२३



[illegible]

उयेदाकः परमपरा सिद्धुविमृत्तिलकालभुविना

[illegible]

५.  
हि.  
०३०











ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
वसुदेवाय नमः ॥  
श्रीकृष्णाय नमः ॥  
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



उत्तरे वंदे चीलाभाङ्गति  
मया हुकु गवम्पद  
जीकु उभिदि॥

प्रचभृमुकावभृपटिगोनउविबद्धिभृपटिवल्लेनपदानेन  
उउरेमुकावउरेभनेप्रकृताउउमुटीमितिभमि॥



कादकाय... योगिनिहृदुपद्वैकैवभावाभुवः॥४३॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ क० भ० अ० ल० य० <sup>किया</sup> क० ग० क० व० वि० वि० क० क० मि० री० क० म० न०  
भ० न० य० य० क० क० क० क० क० क० क० क० क० क० क० ॥ व० वि० ॥

श्रीलक्ष्मणः श्रीरामः  
 श्रीलक्ष्मणः श्रीरामः  
 श्रीलक्ष्मणः श्रीरामः  
 श्रीलक्ष्मणः श्रीरामः

۵۳۹



५३॥ अथ चतुर्थः सर्गः ॥ १ ॥ देवविषयमपेक्षा विद्वान्नामिति उ  
क्तं पत्राय देवसु भद्रास्तुतेति धीर्यये नदीति ॥

अ० अ० कादंका  
 अ० अ० पदवभि  
 अ० अ० अ० नमु  
 अ० अ० अ० वउ  
 अ० अ० अ० पका  
 अ० अ० अ० अ०  
 अ० अ० अ० अ०  
 अ० अ० अ० अ०

[illegible][illegible]



धालयपिकतुगलमिरेधिउनिजतामधिप्रभाठभाकुसुहुठभाउभाउमिहामहुन ॥ स  
 उधुभाहुगाउ उरुठभाभुठभाभवेवउपिपडेः परः ॥ परेउउनमहुयेप्रभाठभाः मप्रभा  
 ठभाभवेवधुभाउउगवतिनेपिपडिउधुहुगैका मिडिउधुहुउकुभाठभाउधुभकरलमुडेव  
 हुठभाभेउभीयडाभिहठिधुयवेमः कुसलसुलकायहुवविवेकभा, मधुभाउभाउभाभिकरहु  
 उरुववधुगैधयेगिनिधयेनहुहुतिः कदेहमयेनउउनमिडियमेवभमिउउमेवहुवमुहुम  
 अनहुगैलभुणीठउभा ॥ ०३ ॥ नउमेवेवहुठभाकुभाठभाउहुनीठउमेउदिमेउनमुव  
 कहुहुमिडि, यरुउं उकुयं, उधुकिरीलभहुहुगैठवडीडियमेउरुधुप्रभाप्रिवमेवउकुयंभ  
 नमराभुमभिहामहुन ॥ सभिउडीमभभीडिकरुकरलउधिया भभुपेयविनीननं

उउउधुपेयविनीननं  
 यमियउपप्रवकभेसुभाकदक  
 उलभभुगहुपउडिउमिउभा ॥

मभिउडीमभभीडि  
 नियउं पचापदेकडि  
 उकिहुमययेकदक  
 गलयेधुभीडिप्रवधु  
 भाभहुं परभुभुडि  
 उकादकगलकावः  
 उमुपेकागदिउंनं  
 उंनंनभुभुभा। उउधुमेउकुअप्रवधुभाभहुं परभुभुभा, नमे  
 पेकिडिउंनंभुभा नमप्रचभुभाभहुलकाः भुकावः  
 परभुभुभा ॥ अडिः ॥

सीलरुहुवपेका, उरुठभाउनियमः उरुठभाउनियमविमिधुंनपेचापदेकदकगलकावः उउउधुपक विमिधुंनपलविपकाउपलवुयः परभुभुभाः  
 परभुभुभाः भनसुठवहुउं, भुमिधुहुउवकावना। उउउभहुनउपपकाउमुहुपिकाभाउराउधुनभीडिभुहुः, उउउभभुभुप्रवभाभ  
 हुपरभुभुभुडिप्रचभाभहुं परभुभुभुडिपका वपिभुमिउवव। भुभा इधुपपेयविनीननं भुभाभदहुउयेवकभाभुगीनयउमकादकगल

ॐ

धु.  
 ठि.  
 ०३५

चउयेप्रभाठभाः मेधिवहुठभाभवेडिहृभिंभुहुउमिभीडि, सउधवउधुपुठभाउडिउव  
 डिप्रभाठभाभिमिधेधुभाउउरुगैकाकीहुयवहुठभाभभाभहुं मेधिवहुठभां सभदिउविसेधः  
 ठभाउरविविउं प्रभाउउरुगैकाकमेकीठवडीडियवडा हुयउडिहृभिंभुगीनीहुधनरधियेप्र  
 भाठभाभुमिहुहुउरुहुगठभाभिमिहुहुउमेधुठभाभेउउनेधवेनउप्रभलप्रभवमभुउयः  
 भम, यिपडेउभहुहुभाउहुहुठभाभुगीलठभाभवेवठवेडा उउउवठविउंमडेडि, नउउः।  
 सकिलिए। भमठभाभुपुडेधुभाउधुकावभुनेकडेनउयहुउउवेउमिहामयः, यउउ  
 भाकेपिपडिउवहुठभाभेप्रभकरलं उडिप्रभाठभाभेधुवापुठभाभुहुकिमरिउंकदंलिहंये  
 गिहुउहुठवेनिमिउंमडीडिउभहुहुदं, उभीयउयउः परेयेभावपिपडिहुमेव ॥ नउवेगी

उमुवहुठभाभिमिउं  
 नभाउः परेउं उउउमिप  
 डिपुउयउउउउं



वहूः कभम्भुः प्रवर्कपिसयभवेपुमाकभिमुरादेवियडिमकृत्तभभक्तमृष्टाभभवेवमृमगउउरुभाइउभापगउउमैवभैवृकिमाउगभकः  
सउउरुमृपुमाकभभुसुक्तभभुउगपडिक्काउउरुभाइउगगुभाकभभवेवपरेकामपिमउउचेनउपिपडाग॥ वडिः ॥

कवकृत्तुमासिउठवेडा। धरिमासुपिधउचुभा। कमासिउउनभा। कदमवृठिसादुधुलिमं॥  
 एकवारंउवमरुनमभुदुपलभुनलेन। पुठमभुभा। कभयेः कदकरल। कवेगपनीउः  
 इइविहूनवामिनेमजनेभुतिभुतानमभुदुदुदु। कभउतिभु। कभयेरेवकदकरल। उगपनी  
 उनउभुतान। उरगउयेभुसीयय। उउभु। मवेमन। उउभु। कनीभु। उभावेनठवेडा। सुभुम  
 उनगउ। कुभा। कभ। उभिभवहूमिभुम। उभुतान। उरगनिभु। पुठमभु। उतिनिभुयः। उरु  
 उमजनेह। भिगु। उवभुयंयवउ। उमसमभु। उभावेनमभुवः। भुम। उरभुवउमकेमोपु  
 भा। कभसुवकृ। कभसुव। कनयउव। उवतिउधं। परमभुगलेहं। निमिउभिउिदुजं। उउः सुभ  
 उभुतानविसेध। उगनप्रभा। कभभाउं। वकृ। कभभाहभु। कदभिउिह। भुगपनीउयं। कुयेपिध



पू.  
दि.  
०३५

भानपिकरुष्टुठभेदेउरलउतःश्रुर्वीयंकेउरुउभक्तवभलपव॥उतावभाभाहैनेरु  
भुजंरुभुहभा,भवःश्रुवकेउरुइतिभुलपउति,श्रुभापववभुतिभमगिउंभाकाउत  
सुसिंसपायाभेकभुभेवभाहृभानयांसायादिधरुगुगुभमभुचैकाठभभुभाभहृ  
इनःभपुभुवभाधिनभुतिभभहृउताव,यउउमेकठुपंविमिधुंकाहंउहृनसिंसपाउभ  
वउभुभिभुभितिनभाहं,करुयउभिरुभितुठभेधिनभुमनिहृहृभःएवभगुद्वियाकरि  
इठवेधिकातिकइठभाठवउतिनियहृयेवभवेभुवकेइवेनहृयेहृकाउताधः॥१०॥  
नत्राठभवभुइवाठैगुठभयेगवेकदकरुलभवेनठउभुयेगवभुइभितुठउनकपंप्रभे  
एहृउ,उउभुप्रभामयेःकरुलभुकषभनभानभितुसहुभभगुयिउभारु॥दुयभउरुभाउ  
पठठभभुभाठभेप्रभाठभभुनउरभभुठभउहृठभानेनियउभानउदभितिकवेनियहृवलभुनेपिप्रभामभुवभानभितुसहुभभयति॥



[illegible]



अभङ्गुनीविप्रवः

सुतः कथं लोकि कथं भवति सुतः

उपरागवृक्षपेक्षणासंभ











उषा नीति निरुद्ध निधन मेला ह्युपि वंदुता मृदुति रुद्रयति मारुते उवसे उत पुरितः कदं कुच विभ  
 मरुयः यमिदि भविषि भवेत् विमृष्टः कुभक रेल किमृदुते, सिविक भुय क मिथर भय य उत  
 नयति भामकु भक र य उति मेडा भि कुं नः भाष्टं, सिविक भम मने धि उ मेड न भु र ल भ भे क उ उ  
 डि, उरु उ क र ल नं मेड न भु र ल भ भे क उ उ डि, उरु ल न कु मि कु द क रि डं य मि दि भु र ल म मी  
 नं भ धि भु मि डे क उ ल भः, उ उ सु य म मेड नं क द क रि उ सु उ न भे कं, भ मरु य उ व ड य म वी र  
 मी ति भु र वः स मेड न क द क रि डं क म मि कु ड क नि भिं डी कु द कु भ क वि रु कु भ व नि भि उ क  
 डं भ म ह्ये उ, न म य उ उ ड भ मरु व धि उ भ भ म ह्य मि ति भि कु ह्य भिः स उः कु भ क मे व उ र सु  
 रः उ मे उ म र रं सु र उ भ य ह्य व भु उ य य भु भ भ म रु उ म र मी नं भं भु रः भ मी भ म नं र उ भु

+ उं, न म ह्य भु नि भि उ भ य भ ह्य उ उ प ल भ मि ति मे ड न  
 भु र लं य मि न नि मि + ३

उरु म भ म प म न भु म न मि ति मि ह्य भु व क र ल उ उ उ र म नि मि उ क र ल उ न सु रः  
 के मि डि भुः न म पि ती र मे ल भु क र ल उ नि न भ म न भु म रं य तिः ॥

ल उ मे व क र य ति, सु उ डि,

भु.  
 डि.  
 ०१७

उ मि ड भ म पि ड उ भ रिया नि रु ह ड ठ व डी ति ॥ १ ॥ सु उ ल व कु र थ भु नि मि उं थ र मे सु रः उ म ह्य  
 भु पि ती र मे ह्ये उ ड नै थ भ ह्ये ॥ य ड ल वं मे ड न ल व नि रु ड सु उ ल व नै थ यि क मि डि र कु र मी नु  
 डि भ नै व थ र मे सु रि ह्ये उ ड नै थुः, न र उं वि मि उ क र ल उ ड डी ह ड, रिया वि रु ग मि रु भ य उ थ  
 र भ भु मि रु र क उ य भ भ व यि क र ल नि रु व य व र भु थ र भ य उ उ उ रं सु र म ह्य भु पि ती र  
 कु मि र ल ल मे ह्ये उ ड क धि ड, भ डं, क धि ड भ भु नै थ भ ह्ये उ उ य कु र ल रु ह्ये उ ड यी ग ड  
 उ उ सु सु र ल व ती र कु मि र ल ल भ भ मि ह्ये न कु र कु र, क भ ड उ डी य न इ थ र भ कः ॥ ३ ॥  
 न र थ गि रु भु री र मि ह्ये डि रि कु र कु भ क र ल क ल नै न वि न कि भु थ रु ह्ये उ डि थ र भु ह्ये डि  
 ठि क र र ॥ उषा नि कु भ क र भ वै सु दे व ह्य व भु य उ उ म र मि भं भु र र मे ल ल न य ह्ये र भ ॥

कु भ क र भु य भ भ रिक र ल मि उ पि भ म मि भं भु र य ह्ये थ र भु सु र उ वि य मि भं भु र म द म य न भु र व न ॥ य तिः ॥



[illegible]

क० द० म० व० रा० क० उ० ३३ : क० ३० ॥ न० रा० क० उ० वि० सि० मुं० वि० रा० व० ॥ क० ३० ॥ उ० मुं० वि० रा० व० ॥ क० म० व० वि० मुं० ॥ अ० उ० व० वि० ॥

८५

भु.  
हि.

मैत्राक्षि यः पुत्रोऽयि मृति  
पुत्रो यमकामैकमुत्तम  
विशिष्टः पुत्रोऽयि मृति  
यः पुत्रोऽयि मृति  
पुत्रो यमकामैकमुत्तम  
विशिष्टः पुत्रोऽयि मृति  
यः पुत्रोऽयि मृति  
पुत्रो यमकामैकमुत्तम  
विशिष्टः पुत्रोऽयि मृति  
यः पुत्रोऽयि मृति

93



भुते, एवैवभकदकगलडा, उठयगुरुलभयलकलभा यमुयावतिथुल, उरियाथ  
 रिभभपुगिडियावडा भापामीनभतुः करलेकवेहुडाथमनभेवनिमलभा नमकुभ  
 करेभुलभदधुकचसिमुहुनेनभयेउमेउकि, उंउभुधिरुहुडा उउः भेविरेवविमु  
 भाक, निरुभयडिमजि वैमिगुडा, उभुकभुपीडिधचभजभु, मिगुभदचयेहुभनिभु  
 उहुगः नमवसुभरुयेदि, यवेहुहुभधिमरुभकुडि, यतेयभरुधरभरुः, यषारुध<sup>मभुनमि</sup> उउः  
 कुभकगनिचतुभानभलमिभुडिविभुमरु<sup>मभुनमि</sup> भुवउषाठभनभनिभाउषाभुधरुजनभं  
 विरुभुषाधितुकिभेवेउनेमंरुकिभुएतुधंरियउउहुठिभानउल्लभडि, एवंभेविम  
 रिभुजभुठडिरु<sup>मभुनमि</sup> मरुमेथएवभुतेउमरिभेवठिभनेरयउयषाभयेमंठउभने

भू.  
 ठि.  
 ०११

भुभभुहुते उठयककभरुठयकभनिचसुभितिभुवमेवविरुहुते, उकिभनेन, यहु  
 भजपभुदिउभुभरु, पतेवधरभरु उडिकयंभुधुधविरुहुं भुभुधुधगमुडा, नकिधाम  
 पउनेमउडीलभरु, निधीडिभानेभमडे, मयभवेवधएभुदिकिभनुधयसुडेरुभ  
 मरुभुडा मठिहुजिविधयहुभुएहुमयेधिमरुभरु, पउयमिगुः ॥ नवेवंतुधुीभा  
 भुउंनेउरुधियजुभिहुल ॥ मयमेसुडेकदकगलडालेके ॥ उरुवसुभभकेयभरुउडि  
 यावडा ॥ उउमुहु<sup>मभुनमि</sup> भुधपहुउउडिरुजयडि ॥ भनुविधगिवडिनः, उठयेमियवेहुहुंउभुक  
 भुधिमजिउः ॥ कुभकाररुमयेउरुनेगीमरुहुहुचभधिमभंविरेकहु, उयाविमिहुडेन  
 विमुभुठेरुठेरुहुनाधगिवतुभानभुभरुनेनभुगुडियमः करलवदिभुगलवेहुहुभरु







निम्नम्

७७५



वसुभङ्गलेउषामइयिविमुभिति, रंस्वरतावृवरुगेदिन, हनिभिउक डडिहृभिः, यरु  
 लयल्लपेठडि उतेनभुलं निपानभिवभलिठिः इल्लपेठविमुभिति, यमुयमउचडिठडि  
 भउवडिहृथकः भभङ्गक डवभलिथ इयिमभंविमुभेयग किभमसिवाउंम भुभुडिथे  
 कुंविमुभिति, यभिडि उयमुमेडिलीयडेम उउमुभुचभरठगहृ थिययमुभवकुगः।  
 उषामइयिभुकमउयेविमुभिति, एवभहृपम भुभुमेभृगभमिभिमुयेहृः उमेवहृ  
 थिदिउहृभेठेभिउथिउं <sup>मकुमु</sup> भुभुभउविउमगीर मववकुडा ठिभानभुरभृगएवकुठि  
 भानेभल्लमेमभुकमभानेएववकुडा ठिभानेहृउउएलउउमुभुपमुउथीकुएलंयषानउ  
 डडेहृभेठः उषभउठिहृउकुभुभुउतेनिउउथयल्लभुथिउथदउमेठेपरभेसुरउव

भवउयडं, उउभङ्गसरलंरियडे, भवउउ डडिहृलिमे, केवलभिति, नउकिफिरुप्रचंरि  
 यडेनथिउउउभुकमभानेभुकमुडे, भुकमभानएवयउभुकमडे डडिठिभननंउमभभदउउ  
 रुथभरल्लमेवकिभरभेसुरडाल्लठेभुक्तिः उरुभभरल्लमभंभारः मुठिभाननभउभरंहृउ  
 कुये, उरुयभथिमेठेठगवडिमुभितभेव, एउमुउंठवडि, यषउंउभुभभानएवकुहृथ  
 रुगिउयभितिभेठकुहृभानभुभेठेभभदउकः एल्लइयमुभुसंवमुभायभीरुमभितिमे  
 इहृउमभिरुवउ डडिभुनः भुनरुठिरुपड, नमभुप्रचंकिफिरुनरगिउं, उषभमुलेकभुठभ  
 भानएवकुनिनरुभीसुरडडिठिभेठरुठिभउउंभेठेभेठे, थिदिहृनरियभउउयउंभ  
 रंस्वरियषभिमुउभगल्लकिभुभिमुः उषामइभिति, यमिवयभिहृरुयउंभउउंस्वरिगल्ल

भु.  
 ठि.  
 ०९५



भनं भसुतुपड'वरुभनं न'भरु कं सभसुतुपनं उडुगेल गृहेल्ल'भनभ'पिभेवरुगवडिभाय'  
सक्तिरुमुते, यषेजं, भ'यविभिदिनीनभेडि, उमेवंमुड'नय'सक्तिरुभ'कु उडु'हृ'भरुड'वि  
नधु'प्रलुमोडनड'भ'रु, वडिन उडु'भ'केरुयभ'एभ'गितविमुनिठगित'नः प्रलुड'भ'भ'  
हृमिसकु'नः भ'उडु'भ'रुमकालभ'केरुवैकल्ल'रुयड'भिसुवैकवनिड'उ'प'भ'भ'भ'रु'स  
भनभ'धियरु, भ'रु'सड'य'ठिभ'ननं उ'भ'वस'भ'भ'रु'चंय'न'भ'वडिउः भ'भ'न'उ'र'ल्ल'क'सु'ये  
ऊ'भ'उ'य'भ'भ'उ'रिठगवडि'गं'सु'र'ड'मिन'उ'के'नैव'प्रलुड'मिन'हृव'रु'र'यः'प'ल्ल'रु'भ'डि'रु'डि  
भ'प्रलुः भ'उ'डु'वि'रु'डि'उ'हृ'व'भ'मि'रु'भ'भ'भ'व'उ'य'उ'हृ'व'रु'र'ल्ल'क'उ'डु'उ'न'स'ऊ'न'भ'मि'रु'हृ'  
न'रि'य'ल्ल'भ'रु'स'के'न'भ'डि'कि'हृ'डु'भ'ल्ल'हृ'व'रु'र'भ'प'न'भ'रु'ऊ'न'भ'न'ऊ'न'स'भ'ल्ल'उ'हृ'व'रु'र'

पु.  
दि.  
०३३

[illegible]

भाषाचुम्भेवमाकुवमभिमवाकुनिष्पामकुपमिवसुगमिद्वरुविपेपव  
विउःमसुसुपुअकुमिरेउपममनेकावकुपममयमापुउ॥ ४३ः॥















श्रीविभक्तिकृतः त्रिषु उडि, एवमाकृता भुक्तलनं मनियभानुभूतिउभिडेउव  
 मवभुमेयभा ॥ एउवृवृगमेउडु निवृत्ते, वभुउडुभुमेयभित्तिभदयः उषमकठि  
 एउकभउडिथिषिवीलेदिउकभउडिउपंडेएकु, भेलन, कभिरए, अत्रिवेमभुनियति  
 उधः नियतिदिनियमः, भमकभूभूतः, ठवभूतलमेवथिषिउ, कभभुविमिउउय,  
 मकभक, एवृषिमर, कउठकम, कभभूभाय, उडु, भूभटभूकम, कभभूमिवउडुभिड  
 भुंउवउ, मणूठविभूडेउउ, भचय, उवम, उभुमेयकगवउएवठेनम, ठेनम, भूउडु,  
 एएगउ, कभठेन, ठेनरु, धिरेवमभरभाऊ, कुयरु, धिभूवेमउपयः भभवन्नभुनीयः,  
 नउवृवृगमेभूयंभरभेभूभूत, उभूवेमविगिणीतिभूतिथमिउभ ॥ ०३ ॥ एउमेवभूएय

५.  
 ति.  
 ००७

[illegible]











[illegible]

सुनिवासा, अष्टमं कुरु अष्टमं पदं सुनिवासा ॥

[illegible][illegible]



५.  
हि.  
००५

[illegible]

कायपूजतिः पुनरुक्तकालादिपूजकं मदिपुत्रमुलका ॥ १३ ॥ अत्रिया  
पूमा ॥ ममुद्रादेवतुभावापि ॥ अत्रिपूजकविमिष्टादेवपूजतिः ॥ अत्रिः ॥











॥ वृत्तमकमविद्येत्तु क्रियाकर्मः सुखमप्यपमदः ममदुःखमप्यपमदः  
उपपन्नमप्यपमदः ममदुःखमप्यपमदः सुखमप्यपमदः ॥

۷۷











वर्गैश्चगीभडा, उद्येति स्त्रिकैयश्चरुं, उचभृष्टागमीरापक वत्रभान्मुति उरुवमृदुगि  
 उद्युठभृदुदुउयः, उभादुभा लललालेहु उभचंभुभा लभुतुपेहु उठवतिकिं विसेधल  
 दालैः यभुविभंवा मकहं उभुललाभादु, उचधिभुभकहं भवउकहं भवति येष्टमह  
 भुभिकवभुभमजकहं भुभा ललला लं कूवडा न किं हि भुभा लहिभउनेप विमृउं भुतुभभ  
 कं, उभुमनेनलला लननिवाहु उउविचुमंठवति, मष्टाभापठ ह भुचकभ, हुलीभिणन  
 मिभाउउं उमिहुलं विभुगेल ॥ १ ॥ नत्रमैक ठिणनविधये भित्तिगिडियमृउं उइकभदि  
 पानंवाहु भुलला लवभुवउउयमि, उकुषभउं भृष्टभंभुभा लभाठभभिसीकराठ  
 भभुभुलला लभिटमहं मभयदुभा लभुयदुभेयं उदुगभाउ, उनिउभयिभभादु ॥ यषा



मष्टुनेकशिं, इं ५ उत्रिपिभनेन विपिनल्लुभे डडिमयश्रिष्टुमेसुप सुगमः भकिं भवे भूतिभ  
भालं सुषकभुधिकरुमिडुषफ्लिडा उषेन धिरुगुविभज्जतुपंसच नभः भभतु मं गभयडी  
हगमभंष्टुकं भूभालं भवभुतावस्तुवति, उडयषा भिष्टु सुन भरुयडं ठरा भन भालीकं डि  
यमिकभ, भूभालं ताभमिव भ, भूभालं नमेतावडा भभु सुन तुप भुष्टु य भुक्तं मिष्टु य भुतिडा  
उषा भगवष्टे डिभुम मिमस्तुः सुस्तु मेगस्तुगु विभज्जके निमताव भूभालं सुगभा ठ भे भ  
मिहं विरुपगु धिरुगु विभज्जक भहगभतुपमस्तु नल्ल भूभालं धये गितायं भूभालं  
ठरात्र धका भडा, धका भडा मे ध भूतिमे धयेष्टुः भवतावस्तुगभे नियतापिक रिमेसकल्ल भरु  
कट्ट मिनियदि उभेव विभज्जं विपडे विपिडुधे निधेष्टु व, सुताव भूभिक्षिग विगीडा दिभह

١٠



उकल्लुभेनयदुषाभंभुंउतुषैवयषावैउक्किभंभंभगयतिगरुदुषावदुभिति, उरुउतुषावि  
 येमनुगमिभेधिभूभालंयषावैरुभिरुतुभिः सवैधिवैरुदुगभभिः, उनदि य  
 सुकनभदुमिउंएतिधुभकदुंभुनंगतुतिमीदिउरुभभनगवतिरुगीतिकरुलि  
 केरुचकुधमंगतुति, गरुल्लोसभदिभुगुभदुदुंभतिभतुति, उरुनविधदुयउमैति, उ  
 रुसुभुभेवउरुभुनघिष्टुउ, सवैभुउरुभुतिभतिभुभदु, रुवाम, भूभालंभेवउषा  
 विभजनदुकंसकनभ, नउवेउरुवसाभुंकंसिदुतिभूभालंकंसिदुतिनेति, नमैउरुकुभ  
 सभदुभतिदुभूभालंभुति, सउरुहैमिभुतीतिवउरुउषाधिउरुवैभुभे, सभदुभति  
 भूभालंभिति केभुवमनभुदुः यमेकभुनीलह्वनंभदुदुभंउक्किंभचभुनीलंरुभयति, य

६.

003

सकृत्क्रियापदत्वे

वदुमियणत्रे

मनुःकरावम्

五

मि'मि'धाय'दु'रु'ह

मिमिपुः वः मिमिपुः

[illegible]











यथैतन्निष्पद्यतेः। उक्तैः भक्तैः प्रभातप्रार्थनादि॥

[illegible]

पु.  
दि.  
०५

[illegible]



[illegible]

उं भूमा ॥ ७ ॥ पीन वसुभिः सिद्धि रिति उड्ड उड्ड भूभिः ॥ एवं मभूत उभम कनीय वसुधये गितया ॥  
 अयं मभम्वत्तु पडया ॥ सर्व सुविमदां भव मिभिः तिं निनु पयि उं भिः मे उं गिः मिः ॥  
 समिः वरुः ॥ भूवत्तु उड्ड उं स्त्रीक मभूम सकेन ॥ कि कत्तु रभः गड्डे ॥ उड्ड स्त्रीक सुयेन भू ॥  
 भूमा ॥ उड्ड लभुत्तु पं ॥ उड्डः भूमेय भूभुत्तु पं निनु पयि उं भूट ठं भूमा ॥ भूवत्तु भूवत्तु न उड्ड ॥  
 लभुत्तु ॥ उड्ड क वभुत्तु निभुत्तु ॥ नियम नैति मज्ज यि उं भूट वभज्ज न लेन ॥ ठं भूवत्तु उड्ड म ॥  
 किः स्त्रीक रुसुते ॥ उड्ड मभूत्तु भूवत्तु पं स्त्रीक न ॥ भूमेय भूभुत्तु पं भिः सु भूट उ भूभी सु ॥  
 वरु भवत्तु भूभुत्तु उड्ड स्त्रीक नै भूभुत्तु ॥ भूमेय भवः भूमा ॥ उड्ड लभूमेय मि भूवि ॥  
 ठं ग भूति भूभुत्तु पं भूभुत्तु गि ॥ उड्ड न उड्ड भूमेय उं येन ॥ इयि भूमेय वत्तु भूभुत्तु ॥







अनुसूचित

लुपता न वेत्ति यथा दूरे भगवन्  
 उपनिवृत्तिपथं गच्छेत् ॥  
 उपनिवृत्तिपथं गच्छेत् ॥  
 निवृत्तिपथं गच्छेत् ॥  
 उपनिवृत्तिपथं गच्छेत् ॥  
 उपनिवृत्तिपथं गच्छेत् ॥

यदि मंटे पूरे सिद्धे मन्त्रे मयेन मधुन विनयका मिमूवदा मधु मय  
किया यद् पिमन मवेहते अष्टवममते मधु गवामु ॥

एकैकमुपैःश्रियमितिः

0.9



कथुनिक'त्तु

[illegible][illegible]

पु.  
दि.  
०००

गिः कउप्रतिविणः सउगैहंमभुवृङ्गलउमुमेवमच३। एवभवठभभनभुअएउउ  
 वयवविमृहभुगदिकःयविकलनभुनकेवलंमभुवृमउउनीउधउयाएकनेकवि  
 धयः। यवद्विगभुकेनिभुवितवउभउनठिउंमवयवल्लकलेकमेसङ्गरेलभीउचउ  
 अएउउतिनिभुवितवनेकअनङ्गविउउउभसुठउीति॥ क्रियाविभजविधयःकउक  
 लंभभउयः सवपुवपिभरुवउयल्लभमिगमिपीः॥ कउकउकउमिसङ्गएग  
 लंमृहलंयेहैहंमभउयेमउउययभउमेयभननंमिषभैउलीनभुभङ्गकहिया  
 विसेधपरभजैकनिभिउकः। नदिभुभपरभसभउवउिनंविहयवभुनेःभङ्गमउये  
 भवेउउे। सनउउरुवउधउनिभिउउउविधयः। कउकसङ्गीनभमिभुस्येदधध

क्रियाकारकमपुत्रेभिः  
 माहमेविभसुउभइल  
 उभसुनमहिगामिभुपम॥

यथा प्रमत्त प्रमथये  
प्रमत्तिमिदुः प्रमथ  
प्रमत्तु विमत्तु विमत्तु  
विमत्तु प्रमत्तु विमत्तु  
भनं विमत्तु विमत्तु  
विमत्तु विमत्तु विमत्तु  
भनयः ॥

कपूरुलीमेवमुनिमनपमडीतुःभभययमुदिहममुकनैकविषयक्रियाभतिः,ममकालमुपिठठिठवभभवपुवठिममूपा  
भट्टिहपुठिभभययममव,उपैवैकनैकभयः,रुतिमृक्रियाभष्टमिभउयःमचापवभभुवविमेषयभभवयविषयापव,वतिः॥





यद्गुरुप्रभासुमिद्विः यद्गुरुमिद्विः ॥



[illegible]

३३

इति गुरु मी भामा तृमधुन क्रिया कृद्विगाः क्रिपमकः सुधरभातः भुगुः किडिभनभवि  
कल्लराहू एकनेकतुप भामा तृमय उडिभित्तमा ॥ एवं सभंवा विविकल्य वृद्धि भुद्धि स  
उ उष्टुडं भंवाडिभट्टं भट्ट उष्टुव भुकर भुमिडिडि सद्धि विवज भट्ट उ ॥ ३ ॥ उष्टुम  
यं भंविम वड गल्ल भुय क्रिया सद्धि रयः यभवेविभुगः ॥ उष्टुभिभभुन एवभुल्ल उः  
उष्टुभिभभं नयं यमकं उडि उष्टुभट्टं भवम उष्टुय उष्टुभट्टि यः यवयव नयं यमकं  
वैउष्टुमम उष्टुवयवी ॥ उभभवपिंरु उष्टुयभित्तं उष्टुयं पुरभुमिडिडि क्रिपमकः सद्धि यंरि  
यभुतनः भद्रकवेन भुविन कवेन रेडि वडुभन क्रिः कल्लः ॥ यं वृद्धि भुडि यमि कडु सुध  
सुध उडि वभुन उडि उष्टुगिडि भवे भभुन एवेडि करक ॥ उभभिभभुन उष्टुयं व कवलंरु  
भुडि यमि कडु सुध उडि उष्टुगिडि भवे भभुन एवेडि करक ॥ उभभिभभुन उष्टुयं व कवलंरु







मष्टमस्तय, त्रुदिमुद्वि  
धयमानमुः क्रियादिक  
न्यनमात्रुवापात्रुपाः ॥ ७३ ॥

क्रियाम्बुयाकद्वयैकवृत्तव्यतिशलीकृतमपि पूरन  
भूमे यउयेकमभङ्गीयेऽतिपरमसृष्टित्तगलभा॥



पथे+  
लकमन्सूरीययात्राप्रिकृतिमिगपमगल  
भूकृष्टकियोगरुद्धिउष्टः

अक्षिमेवमुभत  
 बुद्धिगुणमय  
 कर्तव्यवर्तिमक  
 लभुगुणमय  
 लभुगुणमय  
 नकहउ॥ अक्षि॥

तकनेकाकुकादिम्  
 ह्यमयउतिरुववेकभा।  
 यमेवेकंउमेवानेकंउम  
 कयभा॥



क्रियावृत्तेषु भिन्नानामुक्त्या कृतं नैकविधया च भिन्नानामुक्त्याः  
भवन्ति पञ्चमिनामेव भक्तवत्सलपदविशेषात् प्रतीयते ॥ ४३ ॥

[illegible][illegible]

मंष्टु मंष्टु मिमंष्टु न किमिष्टु माभाष्टुः मंष्टु  
ममंष्टु उवतिमिष्टु मिमंष्टु उवतीषमंष्टु उतिमिष्टु॥















[illegible]

महाराष्ट्रमहाराष्ट्रमहाराष्ट्र  
द्वितीयकर्मभूतमहाराष्ट्र

॥ दलमिति ॥

वृषभभुवःकि  
यादलेविक्कृमिः

[illegible]

मनेकमृद्विहङ्गमरुभाम्रसक्तः क्रियाभाषणकालक्रमेपि। एकमुत्त  
रवम्उत्तममतापरित्यज्यादि क्रियकर्मकालक्रमेभिर्व॥ अत्रि॥

मनेकमित्तमुनिमैसकमः, गदाङ्गववडा, कालरुमः भद्रकागभल्लिकादिबडा, लकमिंसुनमैसकमः, मुद्राङ्गववडा  
वैअउमपुंसां, अकडकालरुमागव, पम्भवाभुल्लवडि, डिबडिङ्गदुभा ॥ वड्ठुपवकालवडि, डिः नमविदि, लु  
पिवेड्ठुमेतवकालः, नमुसंवेमंसे, नमविमडुपमवुंसे ॥















पीठप्रकाशमुद्रः +

[illegible]

पु.  
छि.  
३१

[illegible][illegible]



[illegible]

गिद्धममुमेकमुनेपेकुदे  
हयेडा, गुगुधुविभय  
मुडिभुयीहवःपकीडिडाः।  
गुडिमाविभुयभिमम  
वउरुडाः॥

विकल्पपञ्चमस्तु नृपसुतः सुमेधोऽपि यथासाक्षात्प्राप्तवान्, अद्वैतमिति ह्युक्तं मित्रिभिरुक्तं  
 नृपसुतः पञ्चमस्तु नृपसुतः सुमेधोऽपि यथासाक्षात्प्राप्तवान्, अद्वैतमिति ह्युक्तं मित्रिभिरुक्तं ॥ अत्रिः ॥

यः भूतः। रु। सुतेमविकले। सि। पिउः। धि। म। म। मि। भू। भ। मि। वि। ण। यी। ट। म। हू। रु ॥ विकले। धे। य। भू। लो। यः।  
 भि। धि। व। रुः। ध। ष। रु। षः। भू। भ। उ। क। रु। भ। उ। दं। उ। ते। ठ। मि। नि। व। रु। ट। ॥ वि। भ। ज्ञ। वि। से। ध। उ। ये। वि। क। ल। हू। ने। य।  
 उ। ल्लि। ष। भ। नः। क। उ। मी। र। मि। र। रुः। भि। धि। व। रुः। न। के। व। ले। व। दि। र। व। ले। हू। भ। ने। य। हू। के। धि। भू। भ। उः। भ। क।  
 म। हू। ष। गे। व। भू। ष। उ। ये। भि। ति। य। सु। भू। भ। उ। दं। रु। भि। ट। व। वि। मू। उ। दं। उ। मू। उ। र। दं। म। उ। रि। ति। नि। क। रं। उ। सु। कि।  
 कि। मू। ये। हू। म। ये। हू। ली। य। सु। भ। व। उ। भू। भ। उ। व। ये। हू। ली। य। उ। र। ठ। वे। उ। उ। सु। भू। भ। उ। रि। नि। क। रं। उ। मू। हू। भू।  
 भू। भे। वे। ति। उ। ते। य। कि। वं। उ। रु। हू। भे। वे। ति। उ। ते। य। कि। वं। उ। रु। हू। भे। वे। ति। य। के। लो। य। भू। भू। रु। रि। य। ॥ उ ॥ न  
 न। उ। भू। क। र। मि। हू। ध। र। ल। ध। ल। मू। र। भू। व। रु। दं। म। उः। क। र। ल। गी। म। र। भू। किं। रु। उ। ते। मि। हू। म। हू। रु ॥ उ। ल्लो। य।  
 भू। भ। ण। मे। सु। भू। क। मे। र। दि। र। रु। न। उ। सु। ते। रु। उ। र। हू। उ। ये। हू। मि। रु। वं। य। य। ॥ म। उ। वि। क। लं। भू। ति। वि। धि।

उल्लापमुभाषासुःपापीनांममुरभुमहा  
कुरुपिरोदुःप्रकमः॥ वशिः॥







नीलकण्ठः

द्वितीयं बृहस्प

अथवा

३०.

उपदेवः पृथिवीमिधुमा  
उद्धृष्टो नृदिष्टान्  
कामलभावनपुत्रे  
कलेउद्धृष्टः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
उपनिषद्भाष्यम् ॥  
पृथग्विज्ञानम् ॥

लिउउविमिउभाभरीकैवेडि, यरुउविकल्नेचैडनिवभु निगरुभुलिपडि, उरुभेनःभुविसि  
 भुभापउरुउल्लोपनःठिपनकरलु, रुभा, उभवेसा, रुठभा, उरुहभिसलु, उरु, उनेव, भु, रुके  
 न, भुक, गेल, नभनगुवेन, उवेडिभापु, रुमिह, रुकिनेन, भु, उिउवडीतिभभुभुभु (उमिउभेउडा) य  
 उभुरुनीभु, रुह, रुभभिसंभाप, रुभभुभुनरु, यहभे, सडीउरु, लंरुविनेभुभुनरु, लभ  
 ॥ नविघडकिभुकेरुवडिभुहउभःभुग, रुयःभापु, रुमिहठिभानरुउव, उडिउउसुवरुह  
 रुवेउरुह, रुह, रुवेमन, उवेडुकेभुभु (उउमउरुवनकेमिडा) उउसुकरुभभु, सड, वरुभभुभ  
 रुयंनरु, धिविमेध, उडिभउ, यारु, रुव, रुमिह, सड, रुह ॥ रुव, रुव, वरुभभु, रुह, उभ, यि  
 भुउ, नरुभउ, उउभुभभु, रुग, लंभउंभरु ॥ उरुभापभभुभभुःपेनभुभभेडिघेरुव, रु

+ भृषमिद्वेदः नहु  
रानिहमुमुपादयः+

कवकवकमनंकवकवविषयमभरनीपुत्रपिमात्रमुवमदृष्टिंराहुंदिउमं  
 मृपवित्रमुपमकवकमष्टुमममपिरदिगवपुषाम॥८॥



[illegible]

परमसिवावभूयं

[illegible]

वृत्तिः ॥ ऊ३ छिद्युय३  
 विमेषकु३ उ३ विकल्  
 लिपि३ म३ दु३ म३ व३ म३  
 दि३ उ३, उ३ विक३ म३  
 दि३ उ३: ॥

प्र. न. वे. वि. उ. ग. उ. क. लि. क. द. न. म. क. नि. ग. य. क. उ. उ. ग. ॥ रु. ति. न. य. न. दी. न. म. पि. तु. प. मि. श. क. मि. ल. म. उ. ग. प. ह. क. म. म. क. ग. ल. प. व. उ. श. मि. ग. उ. ह. न. उ. ध. म. न. उ. म. उ. ॥  
न. म. म. उ. ग. म. म. उ. उ. ग. नि. र. क. म. र. दि. क. र. वि. ध. य. ॥

[illegible]

मृदुपत्रिकाऽतिमधुरः



ननुयकिधग्मेस्रगनि धुतयेवभमभियं हवदग्भग्भुभुएड्भुएड्भुयभभिमिह्वैमिह्व  
 थथतिःयेनकिन्नायभत्रभालिउभुएकएवठगवाना नमउडुडिरेकेलहवदग्भुनिहंकि  
 पुनउडुभदृष्टमउडुसमुद्र ॥ उडुलिककभभभुभभयःकेवलंकमिडा सुठभ  
 सट्टयःट्टट्टट्टट्टउभभभिमिध विसेधेजवठभभुभउयंनभनःकमिडा विकल्नेधठवे  
 रुविठवकुडकगभिध ॥ केवलभेडावडाठभनंठेनभनगवठभभुभभगडःकमिमिध  
 ठमउडिस्त्रिकसुयभभमीलिउभुभभुनः यमिजेवकलेभभुठभभुठडिउडुलएवठव  
 डियमकभभभुंरहृदियभट्टकंनभभभभुंरपष्टमीडेवंडुधंउडुधेजभभुभिमिधः  
 कमिमिठभभभवडियडभुएडहवदग्भुभभभुविधयःभनदेहेव

वाङ्मिः ॥ मृदुङ्कादुपे  
पटकापुपतिपुपुत्रे  
पुवत्रेपुविकल्पेपुका  
इयविषयेपुवका  
उमुत्पुववमिः ॥

वाङ्मयः ॥ मुद्राभाः कदापि  
 न विदितुं पृथक् द्वादिपुष्प  
 त्रयमिति वृत्तवदुत्तरे  
 उभयमिति प्रवचनवृत्तिः ॥

भु.  
मि.  
३३

एवं मङ्गलमस्तुः प्रकृतिः प्रत्युत्पन्नमभ्युत्थयति नित्यं तद्वति, उद्भूतं नमस्तु यथैकं तद्वति,  
 महेष्वा<sup>उपग</sup>स्य नियतं मङ्गलमिदं भवति भवति भवति, उद्भूतं मधुसूतं उद्भूतं उद्भूतं मङ्गलमिदं वि  
 भयं भवति मङ्गलमिदं उद्भूतं तद्वति तद्वति तद्वति मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं  
 मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं  
 कान्तं तद्वति मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं  
 नः मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं  
 तद्वति मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं  
 मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं मङ्गलमिदं







दुयेस्तुनयेः प्रभातं कुरुते  
 एक इति ध्येयं प्रपतिः प्रव  
 स्तुतं प्रभातं विना ॥

मुक्तिस्थानकाले







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
उक्तं श्रीभगवानुवाच ॥ यो मामेकमेव ध्यातुं शक्नोति  
तस्य ह्यहम् कृतं तत्त्वज्ञानं ॥

मन्दिचक्रवृत्तिरिच्छावभाषणे

सहवर्तुवदः

उदङ्गुल्लेपिममिन  
भीति॥

भूयः तत्र उच्यते किं हि यः पिभूतं ह्यभयत्रे वल्लभ उच्यते ॥ १० ॥ तत्रैव भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये  
 वृत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये  
 सः भूयः तत्रैव भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये  
 धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये  
 वमिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये  
 सुखीति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये  
 लोकाभ्युत्थानं निवृत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये  
 एवं तु धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये भक्त्युत्पत्तिरिति धर्मसामर्थ्ये

सुन्दरुदयि त्रयीति मया

ककुमकलमभ्युच्चिन्नकल्प

[illegible]

73

[illegible]



77



प्रचपद्वाम्बिवमनभा

उपलब्ध

नैवमिडिप्रकृष्ट, नवमप्रविष्टिहृत्प्रमद्वत्  
वक्तुमात्रप्रधानविधयमनय ॥

गुक्तिः न भू

पु.  
दि.  
१०















[illegible]

सुत्रकमेविद्विभुषितकभूमिभुषणीयकवर्गः कदकः  
॥ ३ ॥ इति सुत्रकमेविद्विभुषितकभूमिभुषणीयकवर्गः ॥

[illegible][illegible]

३३

## ਠਾਤੁਮਿਤੁਤੁ

अत्रमहान

डिभचं उभुठ भभच भिमं विठडी डि ॥ मरु विरउ भुठ गल इभा <sup>मरुमरु</sup> कभ भवमनी येन उमीय भ  
 उभुठ कलि उ निमल रिघा म निउ वेहु वेरु कठ वहु धेल गल इभ भुठे डि डि उः ॥ केवलं  
 विधये लोप न वल्लु डिः इभा वठ भः भभ डि उः ॥ भभ इभ योग धहु मि वि मि उ उ धे यः भ  
 मरु नं वहु भाल्ल सुग भु उ उ उ ध मे स क ल मरु ध क लि उः इभ मे स क ल ध रि धा पी उ न उ  
 धि उ भु डि वि भु क ल उ ये ध र क य भु डि ठि क केवलं डि उ भं वेहु इ मि न ॥ ल ये डि म भ च भु भ  
 क मरु ध ध र भ क उ सु उ म य इ न भू क म भ इ ध र भ क उ य ठ म ठ व मरु इभा मे व भ मे सु  
 उः सु वि हु भ ने उः ध रि सु मे मे स उः क ल उः भु ठ भ उ सु य भु डि उ भं वि रु भु मे व हु धं य सु  
 डि ॥ सु उ ल व न डि म य भू क म क वि लु न भु ठ व भु भु भाल्ल व न भु ये उः भु ठ भ भि रु भि

कदकगलकावेरी  
 ककुगउउरुमःउउरु  
 पापपवकाभये  
 गपकुम। रुमियषः  
 भागावउउरु ॥

केलियसुगं वृद्धादी  
संभुं माहिमेकैपकलि  
उसुदेभदेसुगं भूभाउ ॥







मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥

यति ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥

पु.  
कि.  
१०

मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥ मृगवेत्तुः ॥



[illegible][illegible]



इलेकंकन्यनामः ॥ कन्य  
यत्रपिकेष्टकेनितिकन्येण  
यदृताः ॥

मन्त्रिभूषणभित्तम  
मन्त्रिभूषणभित्तम  
मन्त्रिभूषणभित्तम ॥  
वृत्तीः ५१६ मन्त्र  
उपमन्त्रः ॥ ३०६ व  
पिङ्गवकृत्तुवृत्तु  
भूषणभित्तमन्त्रः ॥  
मन्त्रवृत्तुवृत्तु  
मन्त्रवृत्तु ॥

मृदुवादिः ॥ अक्षमं विदुः अक्षमः वक्षमः पूषमं नीनः मिदुवमं नृपेयं पूषममनः भिदुवमम ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुपरषाभभूतन  
भामिरुवाम्भू ॥

महानयं निष्







पिङ्गभुजाः पञ्चभुजाः पुष्पभुजाः धनुर्वन । कुपातीतुयभुजा मुमुक्षुनाश्मं मयउतिउभावे ॥  
पिङ्गजम्बू लिनीमक्तिः पञ्चदशः प्रकीर्तितः । कुपमिहिरुकिर्कुपातीतः परमिवः ॥

हुं मङ्गल्य सुविउं मिउतु भववसि भूला मेरु मीति मभीपवदुभिक विसेध उउरे उरभ  
 रिक डे येगिनं एरुम मिउय धिउं भु मिउय म गभेभठ हउरे, मधन भुनं म ह्याष्ट घडे ।  
 कले सुलि उभेउ सुमिउतुं कहुता भयभा ममिउ पभु सुह ममिउं गुल उय मिउमिउति ।  
 उउिउं, मसुहैरु मिहव भसे विकल्पाव ॥ ५ ॥ <sup>सुह, सुह, सुह</sup> द्विविधे धिमा यभनं भूह ये द्विप, मउठव  
 भउठ पभु, उभउ नभु, मिव उह, मिउि, मउभउ नभु, मिव उह, मिउमिउति, <sup>मउभउ</sup>  
 सुहै द्विप, मसुहै <sup>मउभउ</sup> भुले उति ये भुले भुवं भेरुं मेरु लेयव भु विर भूलाव, नमिउ  
 सुहै धिद्विप, उउ सुहै <sup>उउ सुहै</sup> उउठव भु विकल्पाव भु पध मिउभा <sup>मिउि भिउि</sup> मसुहै धिउ उभउ नभु क उय  
 उरभ भूभु उउ सुहै विकल्पाव उं महु उउ भूह भेरुं हये नि उभा ॥ क ममिउ वरु मेय

+ विकल्पपद्धतिप्रमाणवैकल्यानि +

वृद्धाधिपमयैगघिष्टंभालभेवद्वनंकेमनस्वद्वविमिभवते उतिमिममधिकविवेककल्पःभू  
 तभूभुनिद्वद्वमन्नभन्ननदीष्टभमभसुतेष्टनभायद्वस्यद्वुतंरुद्रिमेवकल्पमभुद्वउयसुद्व  
 नमःद्वः सुभगेउभुसुधियैष्टिस्मयंवेद्वकवमभरद्वंभद्वभानसुभंवेद्वधत्तुभंयत्रकि  
 द्विद्वधंभकलवेष्टुगमिविनिद्वजंसुद्वद्वत्रुभुलुंनउभरुद्वउकसभुठवंभुभद्वउद्वंसु  
 द्वद्वकवमिभाल्लभुद्वउयसुद्वः उमिद्वधिवेद्वसुद्वउंउद्वधिसुद्वउगमिडियवममभु  
 वकल्पननद्वद्वउति, उमद्वभाल्ल कलिउउति, नमानवभु, धरभाल्लभुकसरलेनभचभुय  
 उःभुकमिनउमद्वमिवसउयद्व, ठिभानभाल्लमद्वकिःभुभउति, भद्विमभाल्लद्वधंमिउद्वंसु  
 द्वंउद्वलंयषभाल्लठवः भद्विमभाल्लद्वधंमिउद्वंसुद्वंउद्वलंयषभाल्लठवः। भद्विमिधगिवे

५.  
दि.  
७७



[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ਸੁਖਮਿਤਿ ਵਿਅਕਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ  
 ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ  
 ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ  
 ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ  
 ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ ਸੁਖਮਿਤਿ







ममकालमुहमेपिबहुप्रकाशःसुखवर्धनैवकिञ्चिदपिनीलमिविमुद्ययवानीलात्तापेहृतिपुत्रुदधुमङ्गलनभक्तिनयेनानियेराविद्वद्वृषभदामिलभेवृवदामिहृरपि  
उपीतामीवनीलात्तापेहृतिपुत्रुदधुमङ्गलनभक्तिनयेनानियेराविद्वद्वृषभदामिलभेवृवदामिहृरपि ॥

दिमत्तुन, दत्तुनिस्त्रिय  
भयत्तुका रत्तुनिस्त्रिय  
जयत्तुका रत्तुनिस्त्रिय ॥

ननु विमुक्तैः प्रकाशे वा कश्चिदप्युपायः कुर्वन्मवेत्यनेकं वस्तु प्रतिष्ठितम् । विधाय त्वत्प्रति-  
पृष्टवन्नान्नैव मर्यादा परकुर्मा । एतादृशं कुरु विवागिन्द्रियकरं भूतलस्य अप्रमेय-  
पः सर्वत्र तिष्ठ ॥

किञ्च भूपिगुह्यपि भविष्यति विदितं न तत्कभूपिबैविष्टनकल्पन ॥

५३

[illegible]

निष्कृतं उच्यते ॥ १ ॥  
केमेष्ट्वे मनेष्ट्वे  
मनेष्ट्वे मनेष्ट्वे  
कल्पयति ॥

नवपदप्रयोगीभक्तवति  
नष्टकामेति कृतं नम  
कलिहिंसेष्टपदप्रवृत्त  
प्रकामेष्टकामेष्टवति  
वष्टमष्टमष्टम

मद्व्यापिः ॥ द्वितीये प्रकाशसिद्धिरीत्यभूत्प्रियेतिनेप्रकाशमंशुभुजवठभने  
प्रकाशमंशुभुजवठभनेपेदययेगप्रिकल्पयद्वानिगिति ॥

金明寺

[illegible]

॥ मन्त्रे, उद्गुह्युत्तियेगिभुवः ॥







पञ्चभुक्तपञ्चभिः

[illegible][illegible]

केवलमिहोक्तविषयलक्ष्यमिति वि  
मृदिः परमात्मिका इव त्वत्ति ॥ ३८ ॥  
तत्त्वमुक्तमिति मत्तुति प्रकृत्यति ॥  
मत्तुमत्तुः परमात्मिका इव त्वत्ति  
मत्तुमत्तु परमात्मिका इव त्वत्ति  
तत्त्वमुक्तमिति मत्तुति प्रकृत्यति ॥

वाङ्मयः ॥ शिखरभयमज्ञा विद्वत्पण्डितमिवैवमुक्तमकालविभूका  
सुते, यथाहमवप्रभुमिद्विद्वत्मकालमिनाल्लभ्यते सुवकाभते ॥



[illegible]

५०



मत्स्यवाग्भट्टादिभक्त  
मुद्रविग्रहभास्करपिङ्गल  
रंजनभाभक्तिकवयभाषः॥  
यद्येकैश्वर्यमस्तुभवति  
प्रतिपादनभाभक्त्युक्तिः॥

[illegible]

यथाभक्तानवनिर्गतिवि  
पथमृषाप्रभाष्यमापिम्  
त्यकुपद्वरुवेपिस्तनं  
त्यकुपेन्द्रिउद्युहित  
पद्मकुपदिचिधयः  
कुत्रस्तनंमृषभवमभि  
मुद्रित्तुः॥











वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १ ॥  
 वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १ ॥  
 वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

५०  
 ५१

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥







सुखावमवकाभभृविभञ्जैविदुगिति॥

[illegible]

वाणिः॥ अत्रागस्तुभूतानुवमत्रैधउमापसगैवलवुप्रतिपुंवहृपिदुल्लयभाङ्ग  
नभनियत्रिउपूवउयल्लयीकगेति, छिन्नल्लयभापेकद्वेस्तककुताभायेम॥

नवकिंय विभज्जमहा, सुभउं कादवुनपपडुं, उरुवुनकि कादनिहूँभो विमुहुं विमुहुपं, पमसुहुं सुहुं पं, नैउहुं भो, विभज्जमहा विनामसुहुं, सुहुं मसुहुं नीलपीठानि निहूँरउं, मायव  
कावल्उं, नउकउं, उवाहुं वउं प्रमैधविमुनिहूँरउं भूअं, नमकावल्उं माइसुहुं, सुनहुं कपमहुं पदउं विमं विगिद्वि विमुहुं सुहुं, सइपडिप्पडलेमहुं उमसुहुं उं अगपिनमहुं ॥

पु.  
दि.  
पथ

क्रियाभूषणं, भासापभयमिकमधिहृष्टेति भवती, मेसकलेनीनमिवैवभाणातीति  
 उहेविसेधलीयनरुवति, यद्विलयेनउल्लुकहु, उद्यारुडिउतुभुविसेधलंकएकेउवमेइभु,  
 नममेसकले विभजेनउल्लुकहु<sup>मेसकले</sup> रुः॥ उदीरिमनुया<sup>विभज्य</sup> उभुमाः रुतयाभकमेउल्लुकहुइ  
 उथपतेः, एवंमेसकलः भजाक्रियुनिहंस, भकलमेसकलभजेथितिविलययोगादि  
 उतेपिहृथकइनिहरे, उरुजं, भद्रभडभद्रमेवीविस्मणीवनभुसुउडि, भारभितियम  
 उमुंडुभंतमियमेवविभजसक्तिः, गरुगरुक<sup>विभज</sup> सैदियद्कसद्कंउभंतुभुभ्रुकसर्व  
 लक्ष्मणोधिकेयमेवेति, श्रीभारसाभुपिनिकुपितं, यद्गुभभृएगउभु, मक्तिमलिनीथ  
 गति, मेधेतिमक्ति, भट्टरिष्ठधनेमजितं, रुमयंसनभप्रतिभुभूनभसुते, उद्धेऊनीहृए

मेति, यथात्रुपमदिम, वरुपदत्रुविमज्जुपा,  
सधेउपिलपका, ननुदिली ॥

अथदिशामकूटनभिष्टमिप्रचिह्ननीष्ट



44



[illegible][illegible]











[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥

[illegible]

सिद्धिपुत्रसुमुखापुत्रीवर्द्धेनैकपुत्रपुत्रकामिभूतवापुत्रिणामानन्दक  
 लपकविधियेनानुतामयेविभज्यतामुपैतं॥ ७॥ ॥







五



उत्तममनःप्रभिसुंभक्तुभुक्तुमेलितुमिवेमिदुभयंनभभवत्वेव। नहुवंवतुंमहं। भवगडःभ  
 गडःधरभालवेद्यगीसुयारुतिडिभक्तुपिडःकदभारभुत्तुडि॥ यउ। पउ। लीकप्रभिसुकर  
 लठवःनतिरुभभिसुयेनिउभुत्तु॥ नमैउरुभिसुं धरभा<sup>भुक्तु</sup>गुहएवभुले<sup>भुक्तु</sup>प<sup>भुक्तु</sup>लमिएयउ<sup>भुक्तु</sup>डि॥ कि  
 तुकधालमिहवपनेन। उउधिनियउभक्तुकरिभभवन्नभुनंकरसर<sup>भुक्तु</sup>मिह<sup>भुक्तु</sup>धारविमिधुमे  
 सकलक<sup>भुक्तु</sup>पिथ<sup>भुक्तु</sup>हयोगः। मि<sup>भुक्तु</sup>ह<sup>भुक्तु</sup>भभक्तु<sup>भुक्तु</sup>उगीयडिसासीयभाल<sup>भुक्तु</sup>द्यगी<sup>भुक्तु</sup>उभंनिदिभालः<sup>भुक्तु</sup>उभ  
 करप्रभिसुभभभुभभगीभभल्लनधरःभरं<sup>भुक्तु</sup>प<sup>भुक्तु</sup>प<sup>भुक्तु</sup>प<sup>भुक्तु</sup>य<sup>भुक्तु</sup>उ<sup>भुक्तु</sup>भक्तुगएवभुत्तु॥ उभ<sup>भुक्तु</sup>भु<sup>भुक्तु</sup>भिसु<sup>भुक्तु</sup>क  
 रल्लि<sup>भुक्तु</sup>ल्ल<sup>भुक्तु</sup>ह<sup>भुक्तु</sup>नैकिभसंमैहभानधरभा<sup>भुक्तु</sup>गुह<sup>भुक्तु</sup>ध<sup>भुक्तु</sup>भानकर<sup>भुक्तु</sup>गु<sup>भुक्तु</sup>रमिउयेडि॥ उइयेगिभेविमएवभ  
 उरुमीमजिदरु<sup>भुक्तु</sup>रु<sup>भुक्तु</sup>भवेमिदु<sup>भुक्तु</sup>भभक्तु<sup>भुक्तु</sup>एउंभक्तुमयगीडि॥ उरु<sup>भुक्तु</sup>भु<sup>भुक्तु</sup>भभवः<sup>भुक्तु</sup>य<sup>भुक्तु</sup>उंविमेव<sup>भुक्तु</sup>भु<sup>भुक्तु</sup>भग

भद्रकाशिकाग्रं कहे  
किवमे, यथाप्यमृ  
मकुमीवरादि.

८

पू.  
ठि.  
२२

[illegible]

षडुचमत्रमहानमयलेकय  
 कागलेमिडुमुभा॥

何

शिखरमेवमुद्राङ्गुलमुप  
 उयेपपत्रमङ्गुलमवतु  
 मङ्गिद्विष्टुमिवमङ्गुल  
 मङ्गिद्विष्टुमिवमङ्गुल  
 मङ्गिद्विष्टुमिवमङ्गुल  
 मङ्गिद्विष्टुमिवमङ्गुल



मृष्टपुत्रादिभ्यो गघङ्गुभादिभ्यो यङागधङ्गुभ्यो यङ्गुभाभ्या  
निगंसङ्गयभल्लो गङ्गुनङ्गुपापनभुमङ्गभाभ्या गङ्गुग ॥

कमिकठभठमदेउरुपपउरुहैउमेयभभहुउउतियमिरहुउवामिनेमुउउतिल्लिकसुयउः  
मेमुयःल्लिकसुयवउउमहुहुउकः॥५॥ एवभभसहुभनउनेधरभभवनममममिउ। मप  
नउउंभभवनंसिधिलयिउंउवमः॥ भूमउमवेठमभुउधुववभिउमति। एवनरकिभउ  
नवहुनःउपपतिन॥ भूमउमिउिधुचिउभभवनःहुपगमेयमहापुयउउमकिउिउिवाउम  
धलउमुधिल्लुविधयंभभवनःउरमेधल्लिकनमहुउउतिहापुयम। यमिउहुनरेनभहुउउम  
भूमउमिउिउमभुपिभभवनःउरभूमननल्लिकनेमुउउउकंवाउउययेहम। मनघाधिक  
धुकलनयःवाउनःहुभपयउठवउउउकिउिउउहम। मुठभेरवउठवउहुपगउउवहु  
भिहुः। नदिनिहुउमेयनकसिहुवनउउकिंरहुन। यइभपकंसनभुभभलं। रापकंसभु  
रंहुः



मिहिनयुक्तमितिहापुरेव, मिहः, प्रभाइतुगलियमिठिउनि, उरुउविधुनभवरुभानंठमव,  
 हुनमिहडिगिउंमेडिहायांउ। उउमुकठभनिधुडाठवरुकठभविमउधुयप्रभाइलंउ  
 वरुगेनभूमिहडिहावधुजं, हुउगुभुधुडिभुयंलागम, पहुउ। सुभुभीयभानभुधिमवेणउर  
 भनभहभभडा, सुयहुमिठिउंउरमुडावहु, भवः यहुभेयंवेणमिउभभुडिभभेधलभुनिय।  
 भभुगनैकडिकहु, वीलमिनभुभेयगमिन, किभभदउं, येनभुभुधुपविमउिउंभहुउ, उभभु  
 भइतुगलभभुमिहुरेव, मिहुरेवभचभभइतुगडा, सुठभभकेकइधगहुठभवेमिहुरेउ  
 हुउंवाभनेरुमवेमिहुंएनयेणुः विधभेकइतुगठवरुमिडि, उषाधिननीलमिवेमिहुमिहः।  
 एवंवभननंउरुमुपहु, हुनंमविमिहुलभभुधुधुडिगव उउमुभुउभेउउ। सुठिउेवेणःउभु।

[illegible][illegible]











वसुदेवः ननु भीमकायः  
 भुजः भवनतुङ्गपुरुषाद्  
 वैमिषु भवत्तु मज्ज  
 नत्तु ॥ सुविषममकायः  
 कायः सुविषममकायः  
 कायः सुविषममकायः  
 यत्तु भीम ॥

[illegible]

पुनः प्रकृत्यैव पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः

एतः भूकमसवभिभूतः अथरुदिरिति उक्तमिभूकमभुमरुवदुः भूकमसुभो कथं।

पकामभृङ्गान्निवृत्तिदिवा  
 केपुमात्तविषयिजनपा  
 वनिनाभृङ्गान्निमाविष  
 यमकील्लपडिःउत्ति  
 मुमाविषयमकील्लवृ  
 मन्लृउत्तिपकविम  
 पल्लुकिन्नमभृङ्ग  
 मभृङ्गान्निवृत्ति ॥











वधुनिभ्रतिहंकरेति, एवंहुताह्वनमज्जिगिति, उतः स्त्रिकसुयेनभूकमहव, हुनंतुपमिहृद, उ  
 उह्वयेनभूकमहव, हुनंतुभूकंभूकंभूकंविह्वनवभूकभगउवभनहुधलनरुमीरुउभःमहु, हुती  
 येन, उह्वनहुधगभेधितवत्रकिह्विहुधमहुउउतिरुज्ञयति, सयस्त्रिकेनभूकज्ञनेहुउहुभभ  
 रुज्ञयत्रहुहुभहुवेभूहंभगकरेतिभूभल्लहेन, उउह्वयेनत्रभेयउभभिरहुभुनिगभुति,  
 सनत्रुंस्त्रिकेनमिह्व, हुहुनभवसुंभहुवः भगभज्ञहुनेतिभूकएयति, उउमिभूकमभुभूभ  
 हुहुभभुभूहवभज्ञएवलीविउमिति स्त्रिकमह्वयेन, उह्वगभहुयभुपनिउभल्लिगि  
 पउ, सनत्रुंहुनभगभज्ञएवलेयंसुहुंहुहुपउःउल्लिउंसभूययतीति उह्वेवभूणनहुहुयंसि  
 कइयेल्ल, भूकमैकउपइयिमहुनएइमिह्वमितिस्त्रिकेनहु, उउह्वउगीवविभुहुंहुनेभ

9

सुमुभकसमुपेठउः भूकमेउ, एवंरु, पुडिभउडिमघरु, गभसतिभूकसमुपः भूमउयउमिभर  
 जीतिवृभमेसः। उउप्रेउमेवलहउ, सउरवउभेभणीविउंभचिउंमूठयिउंभमझरुइहनमऊर  
 भूनीलनंरुउं, लहलसइमेसः सुधिसरु, झउं, सउमईविमुिउवेहुवमी, गऊकेभायीयः  
 कलिउः॥ भूमउसुमुभकसमुठवः॥ ३॥ सुमिउः ३०॥ उडिसूभरुमदकिनवउभुविरमि  
 उयंभूठिहभुइविभमिहंभउिमकिनिउथलंमउउभक्रिकभा॥ ४॥ <sup>मिभरुगुण</sup> सिभरुगुण  
 उडिमप्रठवभाउभूकसकः सुनसकिभनीधनयभूमउंभुमःसिवभा॥ एवंउवइउिम  
 ऊःभुउभभूतिभमिउभा <sup>भूतिभमिउभा</sup> सुपुनउउरुभणीवनीयसुनसकिभरुभाउ, निरुयंविउहवउभा।  
 नवठभनभिरुहयभरुभंभूतिभमउउहउयस्रिकैकुविंसहनिउथयति, उइहैनस्रिकैन







39



[illegible]

वाङ्मिः॥ पुनः श्रुत्वा कविकल्पने पिप्यटमिमं पशुमिप्यटि  
 यमिति वपुःपुनः मयमेव गच्छनं पशुवममृते

[illegible]

विवेकभूषणमुद्रितं ५० विवेकभूषणमुद्रितं ५

[illegible][illegible]



५८॥ अदभालं वै सुममि  
 विष्टुचरुवै सुममि ॥  
 उन्मिष्टुचरुवै सुममि ॥  
 नउ किं व सुमि ॥

वृत्तिः॥ अथ नृपुमिति पूमा इत्युक्तं मन्त्रपुमन्नादिकान्वयमुच्यते चिह्नं  
कषणमेतदेव भुक्त्वे भौमभक्तुमिति ह्येनपि निमित्तमभ्युत्थं का ममेव॥

भारतस्य सर्वप्रथमः



०  
 भूयःपुत्रमिदं कुरुकेनमिदं पद्मगामिना लिङ्गेन गृहीतं भूयः संयमं करोति, उग्रपद्मकीयमिदं भू-  
 ल्लन भूयः पुत्रं भगवन्ममिदं विनाशे वेति ॥ पद्मिदं गृह्णन् पिष्ट्वा प्लवङ्गीकृतः ॥

[illegible]

+ भिमूडडिळ'डीडुडु'डु'पगभेन +

[illegible]

उल्लो नभः पिपासु भुङ्क्ते मरुतो यत्रैव ठा मरुता

[illegible]

५.  
दि.  
३३

[illegible]



मनेनपूक... भुमंविदिः भुनक्तुं

भुमंविदिः

भुमंविदिः भुनक्तुं

उत्तुं भुमंविदिः भुनक्तुं... कलभीरुं उंयत्... भुमंविदिः भुनक्तुं... कलभीरुं उंयत्... भुमंविदिः भुनक्तुं...

यतिः ॥ भुमंविदिः भुनक्तुं... भुमंविदिः भुनक्तुं... भुमंविदिः भुनक्तुं...

भुमंविदिः

मनीषा... भुमंविदिः भुनक्तुं... भुमंविदिः भुनक्तुं...

पू.  
ठि.  
३३

उत्ति किं... विभजनमिति... भुमंविदिः भुनक्तुं... भुमंविदिः भुनक्तुं...

यतिः ॥ भुमंविदिः भुनक्तुं... भुमंविदिः भुनक्तुं... भुमंविदिः भुनक्तुं...



भचङ्गना किङ्कनभङ्ग  
 एषवमृतिमयनिगु  
 गवदिगमोभङ्गमुद्रा  
 रुपहङ्गीकागव॥

सुत्रकुयभा नः समदभा  
ले पितृदि सुयगितिक धं  
नष्टवदाद उहृजः ॥

सुदृषभः उच्यते

मनुष्येन



वतिः ॥ भद्रिभक्तभक्तिप्रचनकुमुलकल्पगभमत्रकभयवृष्टिप्रकाशितभृगभजेनतः भृगुभक्तकालवमत्रभगकालेनभृगुभक्तभजेनमुष्टि, कमाभिरुक्तिवम  
मुष्टिकाभनमृष्टभृगुभक्तिभेककभद्रपल्लवभृगुभक्तकालवमत्रभगकालेनभृगुभक्तभजेनमुष्टि, कमाभिरुक्तिवम  
भक्तिवम

भूपकमनःठावःसिंहंभद्राभीतिह्रनंह्रतिभद्रमेवेतिभनगष्ट, धतिउमिति, उमउं, भूद, सुउ ॥

कभयसुधकलेरुचुचभितभभधनं <sup>मं</sup>भुलकानं <sup>मं</sup>पठकभभाउ <sup>मं</sup>पपिलकन ॥ ७

ॐ अ॥ त्रिविकल उवमं पुवभीय इहृषा भुभुह्नि उकल उधतः । एवं सद्य वमपुवभाये

ॐ भूतवमृमितिभम <sup>वृमृम</sup> कृमिधम <sup>सुवृमृम</sup> कृमगत्रहंयक्रिः <sup>सुवृमृम</sup> भूकमते । <sup>सुवृमृम</sup> भूकमभनपुवभाउहृपु

वमयेत्प्रभयः शृङ्गा, भूकामनमनउमनीउनकलभृष्टगेन, नयिभूकगेला, उमभिहृवा

[illegible]

ये, वेहृठगोभक मङ्क क वरुभा विवेसिउय, भद्रुमदधु० हृवठ भक लमु, वलधुना  
मिरेण सरोविभजे माहि विवेस इव, सकुअ भावे दिरुव भ भद्रुथभा भडाक भंभुभा...म

यत्वेककठागविभज्जमं ठिनिवमइन, सुठमभड्डिठिवसुपुपमी पूहउमइम  
मेकालयेगेन भित्तपिबेमुदधुल्लोतिविजेमेभूकामभुम्भकगीभायापमे निठामउउतीउवतुभवमेदमिमदकावहुउवतुभववदग्पाइतेममति

[illegible]

स्वदिउभ्रभरलं यमेवभकरभगभसिमिउकलकलमिभ्रजभरिषुभायाभ्रभ्रठवपरिगुरु

उतिभाय विहृदुयदुयभयं उतावभकलभिक्षिवितरलमउरमितुभलिभूषुभागभिकभ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 विष्णुसंज्ञा ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥

तत्रैवम् । त्रिउभयपक्षमपि पुंस्त्रीकत्रगलि । उद्यमिकसिद्धयत् । उरुम् । त्रिविकल्पः ।

नमः नैनः भूकमुते भुक्तभंभुजिनेदिविकल्पाः चतुष्टवेनमयेनभेदः भूकसदं नीतभु

मानीकीतिभण्डप्रतिपत्तः नमोभयिभण्डप्रकृत्युते, हनप्रहृतावेल्लभवेष्टइमभक्तमेष्ट

५०

30

लेका दृष्टिपथानि  
मत्रिद्रिग्यामिउर  
द्रिग्यामिउरगविगगम  
उःमममः ॥

अमुकमप्येति, अमुक  
वमुदिनिष्कृतं  
कालमप्युक्तं  
सुगकतवकालं  
जः। अमुकमप्युक्तं  
अप्युक्तिमुक्तं  
जः। अमुकमप्युक्तं

[illegible]







[illegible]

५.  
छि.  
३३

परिमृज्य एकमङ्गलमुक्त्वा किञ्चिद्गुणं भा  
 मङ्गलमुक्त्वा च यत्रैव धर्मिणीयते उति ॥

निष्ठितकटुपलाठकवैलकाष्टाष्टनमिमज्जियुक्तभावेसुदभयमभूयः तउरुप्रगमेन  
किंकिमिंरुभेतेतिप्रभङ्गः। ठभेतेति उभयवस्तुद्वीकउष्टमितिप्रभङ्गविधदयः नष्टेष्टन।  
मिडिदष्टेवंनष्टमितिप्रभङ्गनेनस्त्रैकेनभक्तमभूयः ममिदनेनेतिविधदयःप्रमिडः ॥ १ प्रमिडः  
३३ ॥ उतिमूर्तिभक्तमादाठिनवगुप्रविमिडायां प्रुतिठिष्टप्रविमसिष्टंभक्तजनप्रथमतिभुती  
यभक्तिकभा ॥ ३ ॥ विधक्तगुप्र विकरंविष्टरुष्टप्रुष्टिउभा प्रुष्टंभुतिप्रुष्टप्रुष्टेव  
भुमःसिवभा एवंष्टनप्रचिकभुतिभुक्तयानुप्रुष्टिष्टप्रुक्तनमक्तिरितिउवष्टप्रुमभुक्तमेल  
प्रुक्तमिउभा उधक्तभक्तमेलभुतिउवप्रुमिउप्रुमभुक्तिविधदयमभक्तनमसाविष्टेष्ट भुंकिं  
उभुतिष्टनमितिष्टप्रुक्तप्रुभा उभंष्टप्रुभाप्रुक्तनमिधयमिभुतिः। उभंउवक्तुष्ट उधक्तुठ

मंचलाभविद्विभुते  
कृष्णयेतद्विद्विगीतः॥

[illegible]



परमात्मैविविधूतवृत्तवभितीनाम् ॥

[illegible]



<sup>न</sup>कीरवकुपभत्रभक्तभूमि <sup>मउं मभु</sup>सृष्टिंमविषयविषयिर्विनमि <sup>कगलं</sup>नमउदंलुउयनिरनुनभत्रभक्तनप।  
 यिभक्तवृत्तउडिपुंमगजुवदरः नमपुंभत्रभितिरुवमहीधुसपभभउउंभउ। भूकमत्रेयतः  
 उताउरुपहुते । तउमेवभभक्तयिउभहुतुभिति । ७ ॥ उझभक्तभितभउभूकवेल विनविपेर  
 धूमक्तभभउनभितिरुमयति ॥ नमेमत्रः कउवत्रुविमउधिमरुसुरः धूमकसिधुधल्लनभउह  
 धेननमक्तिभाना ॥ भंवितावहुकमउउडितावत्रकेमिरुधहुवते । भाउभंविहूमिभुधुभाउविमू  
 उ । नमउकपंभभूकमः भहुकपदपवउषभुडा उउझभूकमभुवहवधदवभितउडि  
 गलिउंगुरुगुरुकठवः । सृष्टिभूकमउधंभंविमभितुडचलमेवकेधितुधुभाउनउपवल्ली  
 कउहः । भमभूकमेयहुहुहुहुउउभरलभपभत्रभितुउरुकापभभविहूकहुहुचिवहुग

पू.  
 कि.  
 ११

<sup>यस्य विमृष्टविषयैरुसृष्टमप्रचमपिभयउकु</sup>  
<sup>भवनेकिउउउवे</sup>  
<sup>उपमा ॥</sup>  
 नमउनमृष्टनभितिः ॥ एनभुलिकभूयकमनभितिउवदरभभवल्लननंयमत्रभक्तनमेकवि  
<sup>विषय</sup>  
<sup>मदभिमंरुनभीति</sup>  
 भयकवेधपत्रभउडिउभभुधुंउइयड । उयदिभुगलनिरनुनभुचिउवदरः भूषभभधितिभू  
 हुहुहुनभभभितिधुचधरुपभभक्तनेनभरलत्रभुलिउनविननभयउ भूमउरिविसूनुठवम  
<sup>मुपि</sup>  
 भूउकाहुभभहुडा एवंभायरुभभुभुभा कनभनभूरलहुधगभभयभुहुवदरः भूरलभयप  
 व । एवंल्लननंयमत्रभक्तनंउडिणयभनएनभितिरुवभितिधरुधगभभभितिनमुडा नमुजीति  
 भभहुते । उउउडिमेटा विमधल्लहुगलनेउभाक सृष्टिंउवदिउनिहूननि । सृष्टमत्रठवल्लन  
 भ सृष्टिमिरुनीनुंल्लनंविकल्पाठिभउभ सृष्टिभूरलभभउंल्लनं उमेउनिभुविषयभूकमनभउ  
 उधालिभरविषयेणउकुनेलभूककल्पाति । नमहेहभूकमउधालि । एवंनभुधुधुंनवेहुतेवै ।

कि.











महावक्त्रेऽमुनेन उक्तं मुनिमुनिपराभवात् ।  
उत्पद्यमानं विद्यते पितृभ्योऽपि न भवति ॥

平







[illegible]

५.  
६.

39

परागहलकलेपु  
वरागहलकवपु  
प्रवरागहलकवपु  
कालः मुकुवैरभीति

[illegible]











मिदू पम मिदू पेवा लू नेम कुता उकुमि धागे मिदू मिदू  
पुंउरु विधुती एमदु भा नम दू वा मिप कं प्रवप दू वा मी उ  
पुंउरु मी उ  
मिदू पम मिदू पेवा लू नेम कुता उकुमि धागे मिदू मिदू  
पुंउरु विधुती एमदु भा नम दू वा मिप कं प्रवप दू वा मी उ  
पुंउरु मी उ

अपि तु निरुभवाभीकूटभा

भयङ्करः

कम्पनिहं नमस्तेपिहृषिकम्पिध्वः कदकगलकवावभेनहः उउपुनैह्वंसजिनि

हृदयभक्तः सुषण्णपूकसंस्तुतं उदिधरमुष्ट्रैवपूकसः शुष्कमनुधावेसनंरुमेपरमु

विमपक्रियः भूकमेकवतिपरभूधि उतः अपरभूकमडासुहृनेवाभावजभूकमः भूकवतु

गवडा १ ॥ एकेप्रसविडभऊअएकसेठविप्रडीडिभाइभउभासकुडे ॥ चषाऊअयषाऊपंप

[illegible][illegible]

भक्तः उवाच भूषणं भवति त्रिपुण्ड्रं प्रमदत न कर्मिन् विवेकिभवं ह्यभक्तकलङ्गमुज नष्टमेतत्  
 पुनरुवाच भक्तिं सध्यासवदिभिः भक्तैः पूज्यते नैव भक्तैः पूज्यते नैव भक्तैः पूज्यते

उत्तुपमधनिधित्त तथसवदिदधःभूता उत्तुनभवइवायेणभुङ्गुरे उडधिकयभक्तमुप्रकमः  
॥ इति संज्ञास्तोत्रम् ॥ इति तिष्ठतेऽष्टमः प्रश्नः ॥

[illegible][illegible]

५३

भा.लं.पु.द.भ.न.भ.चं.स.ध.र.क.उं.रा.ण.कं.म.भ.मि.उं. <sup>अंकगति</sup> पद्.योगे <sup>विज्ञान</sup> विज्ञान <sup>सूत्र</sup> सूत्र

कं किं वी प्रसन्नं वदितुं न शक्यते ॥ १५ ॥

हाकिप्रसन्नमहेश्वरिउद्दलभा ममभमसुद्धनिहःपुत्रलुसुद्धमभुडति ॥ उद्दमभुडनंनिगह  
मकारभिमूर्तिनंभुडिपुत्रपुत्रगुभा

इउंमैश्रद्धाभिनिगकउंहुनसक्तिमेवथगीष्टिप्रभरु ॥ हुनंममिउुपुंमउुमनिहुंकिभरुवडा।

सुधाधिराजभेदभक्तसमस्तपूकामतः ॥ धरदुधगभनभूमिधामनभेददुचधकावानीकरीतिभूम

नृविपदयलकेभेकविष्टीति । उइकृवादीविहृइभाकृनउउंऊउ उरुकलीनभेमंकवविमिप्र

**भू विमेषल उभावल भुभव भुंवि सिध्नी कचं भकु ल भदि मरु विडं भभद यति चरु न सु मित्र रुव**

कुम्भिभिः प्रियं कृत्वा विसेधतुं न शि। विसेधता विसेधकवै दिशेष्टकयः नमः भक्तमेवेष्ट

[illegible]

कत्रुगभस्त्रि, भउकूबालः धदत्रयष्टउ हनभपिउदिश्रकसभित उइष्टववउउउमपि























[illegible]

मद्विः ॥ उपिपुष्टकान्मभद्रंवेष्टुं पश्य पितृययैव प्रभिमूर्तिः उतिमिदूतवमुभंवेष्टुमभिदूतयामुपययिमीष्टुः, उष्टयमुष्टु उष्टुमयामुष्टु निमनतिगिणनमेवमितिः ॥

५०  
 ५१  
 ५२  
 ५३  
 ५४  
 ५५  
 ५६  
 ५७  
 ५८  
 ५९  
 ६०  
 ६१  
 ६२  
 ६३  
 ६४  
 ६५  
 ६६  
 ६७  
 ६८  
 ६९  
 ७०  
 ७१  
 ७२  
 ७३  
 ७४  
 ७५  
 ७६  
 ७७  
 ७८  
 ७९  
 ८०  
 ८१  
 ८२  
 ८३  
 ८४  
 ८५  
 ८६  
 ८७  
 ८८  
 ८९  
 ९०  
 ९१  
 ९२  
 ९३  
 ९४  
 ९५  
 ९६  
 ९७  
 ९८  
 ९९  
 १००







साङ्गकुत्रांणीवमस्येपुतिष्ठने, एणीवकुं मणी  
 वर्तमानविकिचोव, यम्मा मेवेउम्माउषेउम्मा वेसुगम्मा  
 निमुपुतिष्ठिम  
 लेहः उषेहनेवम्मा  
 वेसुगम्मा ॥

मंशुगवमुत्तुभाज,  
 इन्द्रात्तुवामिग  
 यतिवैकंवावांकि  
 मपिपुतिमुकेंतुमि  
 हुतः ॥

[illegible]

उपस्थितः भिक्षुः, यथादिक्कामिपि मज्झिमसुत्तं उच्यते भिक्षुः  
 पामस्यैः, नानाभिः विविधैः उच्यते नानाभिः विविधैः भिक्षुः  
 विविधैः ॥

卷之四

रिडि, तउरुजंठवडि, नकरकडुपरिठगवडिन<sup>परिठगवडिन</sup>पिण्डपकडुपरिठग<sup>परिठगवडिन</sup>, सपिठभेद<sup>परिठगवडिन</sup>पमरलभाइमेउडा<sup>परिठगवडिन</sup> हव  
 नरभापन<sup>परिठगवडिन</sup>नंभुमल<sup>परिठगवडिन</sup>नंउवडिवविमूतः<sup>परिठगवडिन</sup> अटिभमरगः<sup>परिठगवडिन</sup> भउरुइमिडुवेदिन<sup>परिठगवडिन</sup> अटिण्डुपुते<sup>परिठगवडिन</sup> भउरुलैवभु  
 कसभानइडा<sup>परिठगवडिन</sup> सउषाभयोइइभिडुः<sup>परिठगवडिन</sup> केवलंभिडुभाइमभभादउ<sup>परिठगवडिन</sup> यस्ययंभेद<sup>परिठगवडिन</sup>भुम<sup>परिठगवडिन</sup>पमरलंमयडा<sup>परिठगवडिन</sup> उरु  
 ठयभपिठगवडा<sup>परिठगवडिन</sup>वविण्डुभभाइनइपिकंकिडिडिडुजं<sup>परिठगवडिन</sup>वडुतेम ॥ ७ ॥ नउपरिठग<sup>परिठगवडिन</sup>भुभावेठवगमीकि  
 भीया<sup>परिठगवडिन</sup>सकिर<sup>परिठगवडिन</sup>विधियउकंसभुडीडि<sup>परिठगवडिन</sup> एउनंउवउणुन<sup>परिठगवडिन</sup>डिकसकिरभि<sup>परिठगवडिन</sup> क्रियाडिक<sup>परिठगवडिन</sup>पिभुउडुभुल<sup>परिठगवडिन</sup>भु  
 उडुवधगभाम<sup>परिठगवडिन</sup>भभुवन<sup>परिठगवडिन</sup>भुभिरेव<sup>परिठगवडिन</sup> उषासउषेगसुडीडु<sup>परिठगवडिन</sup>मिउथमरकेसनभुडिपत्रः<sup>परिठगवडिन</sup> नमएरुदुडिडु  
 वनरभापनभुमिडभ<sup>परिठगवडिन</sup> सषा<sup>परिठगवडिन</sup>एउरुणीवडुनडा<sup>परिठगवडिन</sup>पिकरुलैठयभपिडुदिभचभुभुभुनभदेसुरउडिडु  
 रउरेविभुकडिडा<sup>परिठगवडिन</sup>भुडा<sup>परिठगवडिन</sup>सउरेउरुमडुनिडुपयडि ॥ उषादिणरुडुडानंभुडिभुणीवमस्य सुनं।

अथदीतिः॥ वसुनेलकालादृतेनकुर्विष्टं अलाभमुपभूलीवत्रिधाभिन्निःलीवं  
भनलीवनेगीवकुंस्तुनक्रियेयव ॥







[illegible][illegible]

पाणिनिः  
 मुमुक्षुर्वैमर्शिकः  
 ममिमुक्षुर्वैमर्शिकः  
 उदिमर्शुः  
 मनेकुमुक्षुर्वैमर्शिकः  
 गभुः  
 मुमुक्षुर्वैमर्शिकः ॥

[illegible]



[illegible][illegible]

३३३

[illegible][illegible]











सुभद्रा

वक्रवर्तीकामयनेष्टः

सुयभभावसुभवा  
३८१५५५५

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 भाष्येन विदुषां च ॥  
 संक्षेपेन विदुषां च ॥  
 इति चतुर्विंशोऽध्यायः ॥

[illegible]



लक्ष्मणः क्रिययाऽभिभूतः  
क्रिययाऽवक्रमतः ॥

सुप्रसिद्ध नयेग, येगवुहे

अकिङ्कर्मण्यप्युपपन्नं पातयेन्न मे क्वचित् पुमान्मुक्तावति । यथापि भित्तोऽमीषु क्लृप्तं न सुखं यमनेपि तुल्यं क  
लादन्तः स मुः सीती क्वचित् । तव मनस्युत्पत्त्यपि यै गन्तुं भद्रं कथं संभारुं पवित्रं मुतीह मादप्यैव निद्रुपिभ ॥



2

[illegible]

यद्येकं, साहचर्यमिदं भिन्नं प्रीतिं भुज्यते,  
भरणवैभवं न भवति, किमेवमीति ॥



ॐ  
 अथ उक्तं तन्मन्त्रमिति  
 यद्विज्ञेयं तन्मन्त्रमिति  
 गमय विधेयं तन्मन्त्रमिति  
 भुजं भद्रं तन्मन्त्रमिति  
 भिन्नीयुः ॥  
 एकं तन्मन्त्रं तन्मन्त्रं  
 कामपुत्रं तन्मन्त्रं  
 संवेदं तन्मन्त्रं  
 तन्मन्त्रं तन्मन्त्रं ॥

[illegible]

उग्रनीकषट्ठिभिर्निर्माणं पशुमनः उग्रसुभक्त  
 नयस्त्रिविण्कादकागलकावभादुः उग्रैः ॥

५  
६  
७

[illegible]







1477  
Govt. SRINAGAR

1477

1477

148

1477

Handwritten text in Devanagari script, likely a date or reference number.



**NATIONAL MISSION FOR MANUSCRIPTS  
MANUS DATA**

DSO 00001 9646

5-1287

Record No.	Organization / Individual 9646
------------	-----------------------------------

Name of the Institution Oriental Research Library University Campus, Hazaratbal, Srinagar.	Communication Address Department of Libraries and Research Municipal Complex, Karanagar, Srinagar.
Personal Collection	

16/6

Title of the Text	Isvara Pratyābhigñāvimar-		
Other Title	Sini.		
Author	Abhinava Gupta.		
Commentary	Bundle No:.....	Acc. No./Manuscript No....1477	
Commentator	No. of Folios.....148	Pages.....296	
Language	Size of Mss. (31.5 x 14.5) cm		
Script	Material: Paper/palm leaf/birch-bark/cloth/leather/others		
Date of Manuscript	Missing portion yes		
Key words	Illustrations No		
Subject	Complete/Incomplete		
	Condition: Good/bad/brittle/worm eaten.Fungus/Stuck		
	Source of Catalogue: Descriptive/Hand list/Alphabetical/Index card		
	Colour of Manuscripts Cream, Brown		
	Remarks good Binding.		

23.01.06